शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE- webinar special VOLUME ISSN-2454-6283 21 Sept., 2021

IMPACT FACTOR - (IIJIF-7.312) SJIF-6.586, IIFS-4.125,

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक

श्री.अनिल जाधव

वेबिनार अतिथि सम्पादक

डॉ.मुखत्यार शेख

डॉ.संतोषकुमार यशवंतकार

विश्व हिंदी संगठन नई दिल्ली,
कला महाविद्यालय, बिडकिन और
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी
महाराष्ट्र के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित..

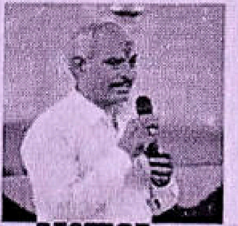

अध्यक्ष

प्रधानाचार्य डॉ. विश्वास कदम
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी

स्वागताध्यक्ष

प्रधानाचार्य डॉ. नितिन आहेर
कला महाविद्यालय, बिडकिन

एक दिवसीय ई-राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी भाषा की दशा और दिशा

21 सितंबर
दोपहर 04 : 00 बजे

मुख्य वक्ता

डॉ. संतोष कुलकर्णी
हिंदी विभागाध्यक्ष
सरस्वती संगीत कला महाविद्यालय, लातूर
सचिव, विश्व हिंदी संगठन नई दिल्ली

प्रमुख अतिथि

डॉ. सुकन्या मेरी जे.
प्रधानाचार्य एवं मुख्यस्थ ,
श्री पूर्णप्रज्ञ संध्या महाविद्यालय,
उडुपी-576101, कर्नाटक।

—श्रुतिकीर्ती सिंह....................141
51.भारत देश की संपर्क भाषा हिंदी....................144
—डॉ.सुधा....................144
52.आजादी के 75 साल और राजभाषा हिंदी....................146
—डॉ.सुधीरकुमार गौतम....................146
53.हिन्दी भाषा की दशा और दिशा....................147
—डॉ.सुकन्या मेरी जे....................147
54.विज्ञापनों में हिंदी....................150
—डॉ. सुनीता बुंदेले....................150
55.हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाएँ....................152
—डॉ.अनघा तोडकरी....................152
56.हिन्दी भाषा के विकास में विभिन्न संस्थाओं का योगदान....................154
—उषा कुमारी....................154
57.वैश्विकरण में हिंदी भाषा की भूमिका....................156
—प्रा.विजय गणेशराव वाघ....................156
58.हिंदी भाषा के विकास में विभिन्न संस्थाओं का योगदान....................158
—विजय एम. राठोड....................158
59.हिंदी भाषा और रोजगार....................161
—डॉ.मारोती यमुलवाड....................161
60.भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की वैश्विक स्थिति....................163
—डॉ.यशोदा मेहरा....................163
61.हिंदी भाषा की दशा और दिशा....................166
—डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार लक्ष्मण....................166
62.हिंदी भाषा का महत्व....................168
—डा इरफाना. डी.एम .एस चल्लकेरे....................168
63.राजभाषा हिंदी....................171
—डा.संतोष रायबोले....................171
64.हिंदी भाषा और भविष्य....................173
—डॉ.चांदणी लक्ष्मण पंचांगे....................173
65.वैश्विकपरिदृश्य में हिंदी भाषा की भूमिका....................175
—डॉ. प्रीति के....................175
66.भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी....................178
—डॉ.ज़हीरुद्दिन र. पठान....................178
67.सूरीनाम में हिंदी भाषा....................181

ISSN 2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

61.हिंदी भाषा की दशा और दिशा

–डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार लक्ष्मण
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजी नगर,
गढ़ी तहसील गेवराई, बीड

"जिसे घर में बनाया है नौकरानी वह बाहर कैसे होगी महारानी । "जब तक पूरे भारतवर्ष में हिंदी पूरी तरह से स्विकार नहीं हो ती तब तक हिंदी भाषा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कैसे स्थापित होगी ? यहाँ लोग मजबूरी में अंतर्राष्ट्रीय बनने की कोशिश करते हैं । जब कि दूसरे देशों में ऐसा नहीं है । चीन , अमेरिका , अफगाणिस्तान और अन्य देशों को देखें , वहाँ अपनी भाषा का ही प्रयोग होता है इसलिए बाहर के लोगों को भी वहाँ चीनी , अंग्रेजी और अरबी का ज्ञान हो जाता है किन्तु हिंदुस्तानी से मुलाकात होती है तो अंग्रेजी में ही बात करते हैं । हिंदी फिल्मों ने हिंदी अभिनेता और अभिनेत्रियों को बुलंदियों के शिखर पर पहुँचाया है वे भी सम्मान लेते समय हिंदी के बजाय अंग्रेजी में बात करते हैं । भारत बहुभाषी होने के कारण भी यह समस्या है । संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को लाने की कोशिश तेज हो रही है किन्तु जब तक भारतीय प्रतिनिधि वहाँ हिंदी में बोलेंगें ही नहीं तो यह कैसे संभव भाषा के नाम पर हिंदी का घोर अहित हो रहा है । अंग्रेजी भाषा को बढ़ावा देने के बहाने पहली कक्षा से अंग्रेजी भाषा अनिवार्य करने से हिंदी के पैरों में कुल्हाड़ी मारी जा रही है , हिंदी के नाक – कान काटे जा रहे है , अब उसकी गर्दन रेती जा रही है । आजादी के 75 साल बितने के बावजूद भी हम चूप है । हिंदी हमारे देश की राजभाषा आज तक क्यों नहीं बनी । अंग्रेजी को सह राजभाषा के पद से क्यों नहीं हटाया गया । इस संदर्भ में नृपेंद्रनाथ गुम कहते हैं कि " मात्र भारत ही विश्व में एक ऐसा राष्ट्र जिसकी राजभाषा भारतीय भाषाओं की जगह विदेशी भाषा अंग्रेजी शान से बनी हुई है । कहने को तो भारतीय गणतंत्र की राजभाषा हिन्दी है किन्तु वह राजभाषा अंग्रेजी की सहराजभाषा के रूप में आजादी की सात : दशाब्दी बीत जाने के बाद भी काम कर रही है । गैर हिंदी भाषी राज्यों में भी संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी राजभाषा का ही घडल्ले से प्रयोग किया जा रहा है । हमारे देश की संसद से निकलनेवाले परिपत्रक हिंदी के बजाय अंग्रेजी में ही क्यों निकलते है ? संसद में हिंदी भाषा को केवल अनुवादी भाषा क्यों बनाया गया ? क्यों नहीं की जाती है पहली कक्षा से हिंदी भाषा अनिवार्य आज भी हिंदी भाषी राज्यों पर अंग्रेजी का वर्चस्व क्यों कर हैं ? अपने – अपने राज्यों में हिंदी में पत्रव्यवहार और केंद्र सरकार से भी पत्रव्यवहार हिंदी में पूर्णत : से क्यों नहीं होता ? इसका कारण हमारी गुलामा मानसिकता । हिंदी प्रेमी और हिंदी अभिभावकों के साथ यह कैसी विडंबना है कि विगत सात दशकों में अंग्रेजी के साथ सहराजभाषा के रुप में हिंदी भाषा को रखा गया है । संविधान निर्माताओं ने संविधान के अनु 343 भाग एक के अनुसार हिंदी को संघ की राजभाषा का पद दिया । अनुच्छेद का प्रावधान कर 26 जनवरी 1 9 50 से हिंदी हमारी राजभाषा होगी । पर विगत सात दशकों से हम देख रहे हैं कि अंग्रेजी को राजभाषा और हिंदी को सह राजभाषा के रूप में स्थान मिला है । अर्थात हिंदी वास्तविक स्थान आजतक नहीं मिल सका जिसकी वह असल में हकदार है । लिखित रूप से हिंदी राजभाषा होते हुए भी सहराजभाषा के रूप में अपनायी जा रही है । इसके जिम्मेदार है हम , स्वार्थी हिंदी अधिकारी , स्वार्थी राजनेता । इस संदर्भ में सरदार हरचरण सिंह सूदन ने ठीक ही लिखा है– " मूलतः वास्तविकता तो यह है कि हिंदी अपने ही देश में अपने ही हाथों , अपने ही द्वारा अपने ही हित से है । हम हिंदी सभ्यता से परहेज और पाश्चात्य अंग्रेजी सभ्यता से प्रेम करने लगे हैं जो कि हमारे स्वतंत्र भारत में मानसिक प्रतंत्र होने का सूचक है । आज आवश्यकता है कि जिस तरह हमने स्वतंत्रता आंदोलनद्वारा अंग्रेजों को देश से खदेड फेंका था उसी प्रकार अंग्रेजियत और पाश्चात्य सभ्यता को खदेड़ने के लिए हिंदी संग्राम और हिंदी आंदोलन चलाए जाए , देशव्यापि चेतना लाई जाए । कहने का आशय यह है कि संविधान में हिंदी को राजभाषा स्विकार तो किया लेकिन यह भी धान कर दिया गया कि पन्द्रह वर्षों तक अंग्रेजी में व्यवहार होता रहेगा । अंग्रेजी की गुलाम मानसिकतावालों ने योजनाबद्ध षड्यंत्र हिंदी के साथ किया । महात्मा गांधी ने कहा कि , " जो व्यक्ति अपनी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा का उपयोग नहीं करता है वह देशद्रोही है । वे अंग्रेजी को बनाए रखने वाले देशद्रोह के अपराधी है ।. . स्वाधीनता के छः महिने पश्चात भारत की संसद एवं विधानसभा में अंग्रेजी में बोलनेवाले व्यक्ति को मैं गिरफ्तार करवा दूंगा । " किन्तु खेद की बात यह है कि आजादी के सात : दशकों के बाद भी संसद भवन एवं विधानसभा में गुलामी की निशानी अंग्रेजी का वर्चस्व है । कहने का आशय यह है कि अंग्रेजी के मुख्य संपर्क भाषा बने रहने के कारण हिंदी आज उस असहाय चिड़िया की तरह हो गई जो अंग्रेजी के पिंजरे में एक कोने से दूसरे कोने तक नाच रही है और जिसको बोलने का ढंग अंग्रेजी सिखा रही है । अंग्रेजी के रहते आज हिंदी अनुवाद की भाषा होती चली जा रही है । उसकी स्वाभाविक प्रकृति , उसका लोप , उसकी रचनात्मकता रसातल

की ओर उन्मुख है । वैश्वीकरण के इस युग में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आज भारतीय बाजार में अपनी पैठ जमाने के लिए में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का सहारा ले रही है और इधर हमारे देश के कई संस्थान ऐसे हैं जो अंग्रेजी में ही अपना व्यवहार करते है । यहाँ तक कि कुछ लोग यह मानते है कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम चलेगा नहीं और हमारी उन्नति होगी ही नहीं उन्हें गंभीरता से सोचना होगा कि क्या फ्रान्स और जापान जैसे राष्ट्र कभी अपनी भाषाओं की उपेक्षा कर अंग्रेजी भाषा को अपनाते है ? क्या रुस तथा चीन में अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ा ? भारतीय लोगों की मानसिकता पर प्रहार करते हुए श्रीनिवास के पंचारिया ने ठीक ही लिखा है– " तो फिर भारत के ये अंग्रेजों के मानसपुत्र अंग्रेजी के पिछे क्यो पागल हो रहे हैं , लगता है , ये लोग स्वाभिमान शून्य हो गये है । इनकी दास मनोवृत्ति अभी मिटी नहीं इस गुलामी मानसिकता को तोड़ने का संकल्प करना चाहिए तभी राजभाषा हिंदी का भविष्य उज्वल होगा और उसे अपना स्थान मिलेगा । की बात तो यह है कि भारत में हरियाणा , दिल्ली , बिहार , पश्चिम बंगाल और दक्षिण भारत के राज्यों ने अपने यहाँ प्रारंभिक शिक्षा में पहली कक्षा से अंग्रेजी को अनिवार्य किया किंतु हिंदी भाषा को नहीं । आजादी के 75 साल बितने के बाद भी पहली कक्षा से हिंदी भाषा की पढ़ाई को अनिवार्य नहीं कर सके । यह कैसी विवशता है ? मातृभाषा के अलावा कोई भी दूसरी भाषा बच्चों पर घोपना मातृभाषा के अलावा दूसरी भाषा में शिक्षा देने पर बच्चों के सुकोमल मस्तिष्क पर अत्याचार होता है और उनकी मौलिक सोच कुंदित होती है । संविधान के प्रावधान को हाशिये पर रख दिया गया और प्राथमिक कक्षाओं से अंग्रेजी अनिवार्य की जा रही है । अंग्रेजी की अनिवार्यता नुकसान देह कैसी है यह बताते हुए दीनानाथ बना लिखते है कि " अंग्रेजी में प्राथमिक शिक्षा की शुरुआत करने का एक बुरा नतीजा यह हो रहा है कि बच्चों को अपनी पढ़ाई का ज्यादा समय इस भाषा को सीखने में ही खर्च करना पड़ रहा है । एक आकलन के मुताबिक बच्चे अपने पढ़ाई में से 54 फीसदी समय अंग्रेजी सीखने में बिता रहे हैं । उनके उपर जो मानसिक और शारीरिक दबाव बढ़ रहा है , उनसे उनकी नैसर्गिक प्रतिभा नष्ट हो रही है । उनकी शिराओं और स्नायुओं पर इसका बहुत बुरा असर हो रहा है और इससे उनका प्राकृतिक विकास अवरुद्ध हो रहा है । " विगत 75 सालों से हम देखते आ रहे है कि प्रतिवर्ष की तरह ही इस साल भी केंद्र सरकार के कार्यालय निगम , उपक्रम बैंक आदि के तत्वावधान में 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाए जायेंगे । कहीं – कहीं तो 14 सितम्बर से हिंदी सप्ताह या हिंदी पखवाड़ा भी मनाते है । ऐसे भी कार्यक्रम है जो सितम्बर के आरम्भ से अंत तक हिंदी माह मनाते है । वैसे तो ऐसे दिनों पर आयोजित समारोहों का प्रभाव बहुधा उतना नहीं पड़ता जितना पढ़ना चाहिए , कहीं – कहीं केवल आधे घण्टे में कुछ प्रश्नोत्तरी , फिल्मी गान प्रतियोगिता आदि चलाकर कार्यक्रम समाप्त किया जाता है । कहीं कहीं प्रतियोगिताओं के सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार दिये जाते हैं और सभी कर्मचारियों को मिष्टान्न / प्रतिभोज दिया जाता है । इस प्रकार के आयोजनों ने यह धारणा फैलायी है कि हिंदी दिवस समारोह केवल रम्म अदायगी है । इस संदर्भ में आकांक्षा अग्रवाल लिखती है कि " राजभाषा अधिनियम के आगे हिंदी भाषा की दशा तार – तार हो गई । राजभाषा पखवाड़े अब बने उत्सवी दोग सच्चे हिंदी भाषा की उड़ती है खिल्ली देखो तो आज हिंदी अफसरों नेताओं के उत्सवी षड्यत्र की शिकार हो गई । अगर है हम सच्चे स्वाभिमानी भारतीय तो क्या 14 सितम्बर को ही हिंदी दिवस मनाते डॉ . विद्यानिवास मिश्र जी इसी बात की और इंगित करते हुए लिखते है कि " रस्म अदायगी के नाम पर जो इस महीने हिंदी दिवस और हिंदी सम्राट के कार्यक्रम होंगे उनकी बात अलग करें ये तो इस पारितोषिक के लिए होंगे कि राजाज्ञा का पालन हो रहा है । हिंदी में कार्यालयीन कार्य करनेवालों को कुछ इनाम भी मिलेगा । अधिकारियों का एक बड़ा तबका है जिन्हें भीतरी बड़ी कसमसाहट होते हुए भी एक दिन हिंदी का नाटक करना पड़ रहा यहाँ एक बात स्पष्ट ही है कि सितम्बर आया कि हमें हिंदी भाषा के विकास की बात याद आती है । सितम्बर समाप्त होते ही हम भूल जाते है कि जिस हिंदी भाषा की रोटी खाते है उसे ही हम भूल जाते है । पर यह वास्तविकता है हिंदी के विकास के एवं प्रचार – प्रसार के लिए हमे निरंतर प्रयत्नशील रहना होगा तभी हिंदी का भविष्य उचल है हिंदी भाषा के चाटुकारों और सुविधा भोगियों के बिलापों से हिंदी का कुछ भला नहीं होगा । इन्होंने कल कहा था और आज कह रहे है कि हिंदी भाषा भाषा के रूप में हुआ है । हिंदी देश विदेश में पनप रही है । संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी भाषा अन स्थानमा रही है । अब वह दिन दूर नहीं जब हिंदी की पताका पूरे विश्व पर फहराएगी । यह एक शक्तिशाली भाषा बनकर उभर रही है । वैश्विक स्तर पर हिंदी का भविष्य दैदीप्यमान है । और यही बात कभी कहेंगे पराकता कुछ और ही है । भारत के अधिकांश राज्यों में तो पहली कक्षा से अंग्रेजी की पढ़ाई अनिवार्य कर दी गई पर हिंदी भाषा की पढ़ाई नहीं । हिंदी भाषा भारत में तो अनुवाद) की भाषा बनकर रह गई है । संसद भवन में जो भी परिपत्र बनते हैं सबसे पहले वह अंग्रेजी में बनते हैं , बाद में इसका अनुवाद राजभाषा हिंदी में

होता है । हिंदी के नाम पर रोजी – रोटी की जुगाड़ में लगे इन उपवेशियों का हमे विरोध करना होगा । भारतीय अस्मिता की संवाहिका हिंदी भाषा को सही रूप से राजभाषा के सिंहासन पर पदासन्न करने के लिए फिर एक बार आजादी की जंग की तरह ही हिंदी संग्राम) और हिंदी आंदोलन चलाना होगा । योगा यही कहा जा सकता है कि विगत 75 सालों से राजभाषा के उन्नयन के लिए हम जितने ज्यादा प्रयत्नशील होते जा रहे हैं उतना ही राजभाषा के प्रयोग एवं उसके कार्य साधक ज्ञान के विषय में रसातल की ओर जा रहे हैं । इसका दोषी कौन ? दोषारोपन से किसी समस्या का उचित समाधान मिल पाना असम्भ्यता है । अत : आवश्यकता इस बात की है कि जो हालात आज हमारे सामने है उनका सही तरह से निरुपण किया जाय तथा जो हालात भविष्य में हो सकते है उनका अनुमान लगाया जाए और इन दोनों चुनौतियों के लिए सक्षम रास्ता निकाला जाए ताकि हिंदी को उसका उचित स्थान मिल सके । जो दिशा , दशा , एवं दुर्दशा आज राजभाषा हिंदी की है उसके लिए हम सभी बराबर के ही नहीं एक से बढ़कर एक रूप से दोषी एवं जिम्मेदार है ।

संदर्भ पत्रिका 3) (2) (4) 6) भाषा भारती संवाद जनवरी से मार्च 2007 पृष्ठ 2 हिंदी में एकता अप्रैल से जून 200 9 वर्ष अंक 8 वापारा मार्च 2007 पांक 2512 राष्ट्रभाषा संदेश– 30 नवम्बर 2007– पृष्ठ 3 मिलाप राजभाषा पत्रिका वर्ष 2 अंक 45 साहित्यांत सितम्बर 200312

62.हिंदी भाषा का महत्व

–डा इरफाना. डी.एम .एस चल्लकेरे,
चित्रदुर्गा, कर्नाटक

मानव एक सामजिक प्राणी है। समाज में रहने के कारण उसे आपस में हमेशा ही विचार विनिम करना पड़ता है। कभी वह शब्दोँ या वाक्यों द्वारा आपको प्रकट कराती है। विश्व की प्राचीन और सरल भाषाओं की सूचि में शिही को अग्र स्थान मिला है। हिंदी भारत की मूल है। यह भाषा हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान है। हिंदी भाषा हमे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर माना और गौरव करवाती है। विश्व में सबसे ज्यादा हिंदी बोले जानेवाली भाषा में हिंदी का स्थान दूसरा टाटा है। भारत देश में यह भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है इसलिए हिंदी भाषा को 14 सितंबर 1949 के दिन आधिकारिक रूप में राजभाषा का दर्जा दिया गया।

भारत ही एक ऐसे देश है। जिसकी राष्ट्रभाषा और राजभाषा एक ही। जो यह साबित करता है कि भारत देश में हिंदी का महत्त्व है। हिंदी भाषा का जन्म लगभग एक हजार वर्ष पहले हुआ था। ऐसा माना जाता है कि हिंदी का जन्म देवभाषा संस्कृति कि कोख से हुआ है। संस्कृत पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, हिंदी यह्भाषा का विकास क्रम है। हिंदी एक भावनात्मक भाषा है। जो लोगों के दिलों को आसानी से छू लेती है। हिंदी भाषा देश की एकता का सूत्र है। पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने का श्रेय एक मात्र हिंदी है। भाषा कि जननी और साहित्य कि गरिमा हिंदी भाषा जन आन्दोलन कि भी भाषा रही है। आज भारत में पश्चिमी संस्कृति को अपनाया जा रहा है जिसके चलने अंग्रेजी भाषा का सभी क्षेत्रों में चलने बद गया है। वास्तविक जीवन में भले ही हम हिंदी का प्रयोग जरुर करते है ।एक स्वतंत्र देश की खुद कि भाषा होतीं है। भाषा और संस्कृति ही उस देश की भाषा होती है ।जो उस देश का मान सम्मान आवर गौरव होती है। भाषा एक ऐक जरिए है जिसकी मदद से हम अपनी विचारों का आदान प्रदान कर सकते है। विश्व में कई साड़ी भाषाएँ बोली जाती है, जिसमें हिंदी भाषा का विशेष महत्त्व है। यह भाषा भारत में सबसे अधिक बोली जाती है ।और विश्व में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषाओ में दूसरा स्थान है।

हिंदी सिर्फ एक भाषा का काम ही नहीं कराती है। यह सभी लोंगो को इ एक दुसरे को आपस में. जोड़ने का काम कराती है ।हिंदी सिर्फ भरा में ही नहीं बल्कि पूरी विश्व में बोलि जानेवाली

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed Journal